अल्हमदु और तिल्लाहों और सलामों के लिए स्वतंत्र मुस्लिमें।
अमायु अबु बक़र के स्वतंत्र टिकियों
"अल्हमदु और सलामों के लिए स्वतंत्र मुस्लिमें।" "अल्हमदु और सलामों के लिए स्वतंत्र मुस्लिमें।"
(तर्ज़मा: में ने सुनतए’तिकएफ़ की नियत की)
मीठे मीठे इस्लामी भाषाओ! जब भी मस्जिद में दाखिल हों, याद रख कर नफ़्ली ए’तिकफ़ की नियत फर्मा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए’तिकफ़ का सवाब हासिल होता रहेगा और जिम्मन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाज़ा हो जाएगा।
हुज़ूद शरीफ की फ़ज़िलत
सच्ची तलाश अल्हमदु और सलामों का फर्मान रहमत निशान है। ऐ लोगू! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नज़ात पाने वाला शाब्दः वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरुद शरीफ़ पढ़े होंगे।
(फरूख़ुला अल्हार, ج ۲/۱۷۴, حदीث۱۰۸)
पढ़ता रहूं कसरत से दुरुद उन ये सदा में और जि’क़ का भी शौक पए गौसो रज़ा दे
सच्ची तलाश अल्हमदु और सलामों का फर्मान रहमत निशान है।
मीठे मीठे इस्लामी भाषाओ! दुमूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी नियतें कर लेंगे हैं:
फर्माने मुस्लिमः "ये’यू समूये’यू ख़िये’यू अल्हमदु और सलामों की क़ियामत उस के अङ्गल से बेहतर है।"
(फरूख़ुला अल्हार, ج ۲/۱۷۴, ح�ीث۱۰۸)
दो मदनी फूलः-
(1) बिग़एर अच्छी नियत के किसी भी अङ्गले खैर का सवाब नहीं मिलता।
(2) जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।
बयान सुनने की निजितें

निगाहें नीची किये खुब कान लगा कर बयान सुनूंगा। देख कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की खातिर जहाँ तक हो सका दो जानू बैठूंगा। जूतर्तन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। धक्का वगैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिंडकने और उलझने से बचूंगा। वगैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूंदे के लिये बुलंद आवाज़ से जवाब दूंगा।

बयान के बादं खुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

च्छूँवालं अल्हिबिः
सल्लल्लाहु अल्हु मुहम्मदी

बयान करने की निजितें

में भी निजित करता हीं अल्लाहु अबुबकर की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। देख कर बयान करूंगा। पारह 14 सूरतुनहूल, आयत (तर्जमातः कनज़ुल ईमानः: अपने मेरी तरफ़ से अगर एक ही आयत हो” में दिये हुवे अहकाम की पैरवी करूंगा।

नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्दः करूंगा। अशांच पढ़ते नीज़-अशरवी, अंज़ेरी और तिमएकल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इंख़ास पर तरज़ोह रखूंगा या’नी अपनी इल्मीयत की धार बिठानी मक़सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन*मामात, नीज़ अल्फ़ाज़ दौरा वराए नेकी की दां’वत वगैरा की सरक़वत दिलाऊंगा। क़हूँगा लगाने और लगाने से बचूंगा।

नज़ीर की हिप्पाज़र का जेहन बनाने की खातिर हृदर्द इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

إنَّ شَآيْعَالِللهِ عَلَيْهِ مُحْمَّدٌ
मीठे मीठे इस्लामी भाष्यो ! माहे र-जबुल मुरज्जब अपनी खुशबूए लुटाने के लिये हमारे दरमियान जलवागर होने वाले हैं। माहे र-जबुल मुरज्जब के बारे में फर्माने मुत्तफ़ ज़ब्बल अल्लाह तालाला का महत्व है। इस से माहे र-जबुल मुरज्जब की शानों अज़मत का अंदाज़ा ब-खूबी लगाया जा सकता है।

कई अशिकाने रसूल, इस माहे मुबारक की ताज़ीम व तौकीर की नियम से इस माहे मुबारक में अपनी इबादत को बढ़ा देते हैं, मस्सलन नफ़्ल रोज़े, तिलावते कुराने करीम की कसरत, दुरुदे पाक की कसरत, सदक़ा व खैरात वग़ैरा, इस माहे मुबारक का पहला दिन करने और इस की जियादा से जियादा बरकतें समेंतें का जेहन बनाने के लिये आज हम इस माहे मुकद्दस की अज़मतों के मुतुळळ सुनने की साह्दात हासिल करेंगे।
का उम्मती हूं, में ने अल्लाह उर्ज्जल से ये दुआ की हुई है कि वो बहुत अपने प्यारे महबूब, नबी ये आख़िरुज्ज़मान सच्चा तेरा मुबारका तक जिंदा रखे, ताकि में उन का उम्मती बनने का शरक हासिल कर्क, में इस पहाड में हे सो साल से अल्लाह उर्ज्जल की इबादत में मर्जूल हूं।"

हज़रत सय्यदुना ईसा रुफ्तूल्लाह ने बारगाहे खुदावन्दि अराज की: या अल्लाह उर्ज्जल ! क्या रूप हमीन पर कोई बन्दा इस शर्द ते बढ़ कर भी तेरे यहां मुकरम है ? इरशाद हुआ : ऐ ईसा (unctou3al-ulsalam) ! उम्मते मुहम्मदी में से जो माहे रजब का एक रोज़ा रख ले, वो मेरे नज़दीक इस से भी जियादा मुकरम है। (नुज़हुल मज़हिलिस, जि. 1, स. 155)

अल्लाह उर्ज्जल की उन पर रहमत हो और उन के सदरे हमारी हे हिसाब मनाश्चित हो।

(जोगी व्याख्या अलीनाल अलीना सच्चा तेरा मुबारका
इबादत में, रिवाज़ में, तिलावन में लगा दे दिल
रजब का बासिता देता हूं फरमा दे करम मौला)

(वसाईनेक बिखाश्च, स. 98)

"सच्चा तेरा मुबारका, सच्चा तेरा मुबारका उभय मुहद"!

मीठे मीठे इस्लामी धाइयो ! देखा आप ने माहे र-जबुल मुरजजब में एक रोज़ा रखने की भी किस कदर अन्यित है। इस माहे मुबारक की अज़मतो शान इस तरह भी वाज़ह होती है कि ये अल्लाह उर्ज्जल का पसन्दीदा महीना है। नबी ये करीम सच्चा तेरा मुबारका ने इरशाद फरमाया : अल्लाह उर्ज्जल के पसन्दीदा महीनों में रजब का महीना है। ये अल्लाह उर्ज्जल का महीना है, जिस ने अल्लाह उर्ज्जल के महीने, रजब की ता'जीम की तो उस ने अल्लाह उर्ज्जल के हुकम की ता'जीम की और जिस ने अल्लाह उर्ज्जल के हुकम की ता'जीम की, अल्लाह उस को ने'मतों वाले बागात में दाख़िल फरमाएगा और उस के लिये अपनी बड़ी रिज़ा वाजिब फरमाएगा।

(केन्युल मज़हिलु, 133/1303/133. हिफ़्तः 253/123)
लफ़्ज़ “रजब” के मुख्तालिक्फ़ माझानी

मीठे मीठे इस्लामी भाष्यो ! हमें भी चाहिए कि इस माह मुबारक का एहतिराम बजा लाएं, इस की ताश्जीम में जियादा से जियादा नेकियां करें, गुनाहों से बचते हुवे हर लम्हा ख़ुब ख़ुब इबादत व तिलावत में बसर करें। इस माह मोहतरम के मुख्तालिक्फ़ माझानी हैं, जो इस की ताश्जीम व तक्रीम पर दलालत करते हैं। चुनान्चे,

शायदः तरीक़त, अमीरे अहले सुनत नक़्ल फ़रमाने हैं : रजब दर अस्ल मरजाब से मुश्तक़ (या’नी निकला) है, इस के मा’ना हैं : ताश्जीम करना। इस के अल-असब (या’नी तेज़ बहाव) भी कहते हैं, इस लिये कि इस माह मुबारक में तौबा करने वालों पर रहमत का बहाव देगा और इबादत करने वालों पर क़बूलियत के अनुसार का फैज़ होता है। इसे अल-असब (या’नी बहाव) भी कहते हैं, क्योंकि इस में जगो जदल की आवाज़ बिकुल सुनाई नहीं देती। इस माह को “शहरे रजब” भी कहते हैं, क्योंकि इस में शैतानों को रजम किया जाता है (या’नी पथथर मारे जाते हैं) ताकि वोह मुसलमानों को ईज़ा न दें। (गुन्यतुलालिबीन, जि. 1 स. 319, कफ़न की वापसी, स. 2)

इसी तरह इस माह के क़बिले ताश्जीम होने की एक बज़ यह भी है कि वोह महाने, जो ALLAH ﷺ के नज़दीक दुर्मत व दुर्मत वाले हैं उन में र-ज़बुल मुरजज़ब भी शामिल है। चुनान्चे, पारह 10, सूरतुतौबा आयत नम्बर 36 में इशाद होता है।

अल्लाहु ﷺ उल्लाहु ﷺ ﷺ

हक़की मुल मुफ़्त अहमद यार खान

इस आयत मुबारक के तहत “तफ़्सीरे नहीं” में लिखते हैं : ऐ मुसलमानों ! ALLAH ﷺ के नज़दीक क़मरी साल के महाने बारह हैं, जो ईज़ादाद,
आफ़रीनश (यानी दुनिया की इबिदा ही) से लोहे महफूज़ में तहरीर है। इन बारह महिनों में चार महीने रजब, शव्वाल, ज़िल-क़ादह, ज़िल-हिज्जा बड़ी ही इज़ज़त वाले हैं। इन में गुनाह करने सक्ष्य जुर्म है और इन में नेकी का सवाब बहुत जियादा है, तो तुम इन में गुनाह कर के अपने पर ज़ुल्म न करो! यह साल के बारह महीने होना और इन में चार का मोहतरम होना, सीधा दीन
(यानी मिल्लते इब्राहीमी) है। (तफसीरे नईमी, जि. 10, स. 293 मुल्तकुल) मज़ीद दुया में बहुत से क़िम्स के महीने और साल हैं, मगर सब में इज़ज़त वाले महीने इस्लामी हैं कि इस्लामी अहकाम इन्हीं से जारी हैं। नीज माहे रजब, शव्वाल, ज़िल-क़ादह, ज़िल-हिज्जा अफ़ज़ल महीने हैं। इन में नेकियां जियादा करनी चाहियें और गुनाहों से बचना चाहिये। (नीज यह भी मानूम हुआ कि)
महीने, घड़िया, दिन-रात बराबर नहीं, बा’ज़, बा’ज़ से अफ़ज़ल है। (तो जब
महीने, घड़िया और दिन बराबर नहीं हो सकते) तो सारे इस्नान यक्सा (यानी
बराबर) कैसे हो सकते हैं? (तफसीरे नईमी, 10 / 295, मुल्तकुल)

मीठे मीठे इस्लामी भार्यो! यकीनन अल्लाह उरुज़ल के नबी और
उस के वली मकाम व मतबे के लिहाज़ से आम इस्नानों से मुम्ताज़ होते हैं।
उन का मुकाबला कोई भी आम इस्नान नहीं कर सकता। जबतृह एक शख्स
के हाथ की पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं, इसी तरह तमाम इस्नान एक ही
ख़ालिक मालिक उरुज़ल के बने होने के बावजूद आपस में जुदागाना
(यानी अलग, अलग) मक़ामो मर्तबा रखते, बल्कि बा’ज़, बा’ज़ से अफ़ज़ल
होते हैं।

सब से अफ़ज़ल कौन?
चुनाने, इस्नानों में सब से अफ़ज़ल मर्तबा हुज़रते अम्बियाएँ किराम
उलीमुल्लाह और सब अम्बिया भी मक़ाम व मतबे में बराबर नहीं, बल्कि
उन में से भी बा’ज़, बा’ज़ पर फ़ज़ीलत रखते हैं, इस बात की वज़हत करते
हुवे सदरशरीरीः, वदरशरीरीः हुज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद
अमजद अली आ’ज़मी इस्नान फ़रमाते हैं: अम्बियाएँ किराम, तमाम मख़्लूक
यहां तक कि रुसुले मलाइका से (भी) अफ़ज़ल हैं।
वली किन्तु ही बड़े मतबे वाला हो, किसी नबी के बराबर (हरगिज़) नहीं हो
नबीयों के मुख्य दर्शक दर्जे हैं, बांज़ को बांज़ पर फूज़लत है और तमाम अफ़ज़ल हमारे आक़ा व मौला सत्यदुल मुर्सलीन सूरतख़ल (सूरतख़ल علیہ وسلم) के बाद सब से बड़ा मर्जता जुज़ह़ते सत्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह उल्लाह उल्लाह का है, फिर हज़रत मूसा उल्लाह, फिर हज़रत इसा और हज़रत नूह उल्लाह का, इन हज़रत को मुर्सलीने उल्लाह अज़म (या 'नी बहुत बुलंद हिम्मत व हःसे बाले अभियान) कहते हैं और येंह पांज़ हज़रत बाक़ी तमाम अभियान व मुर्सलीन, इन्सो मलक व जिनो मल्को मर्ज़ूक़ाते इलाही से अफ़ज़ल है। जिस तरह हज़ूर (सूरतख़ल علیہ وسلم) तमाम रसूल व सब से अफ़ज़ल हैं, बिला ताशबी़ हज़ूर (सूरतख़ल علیہ وسلم) नेत्र सबके में हज़ूर की उम्मत, तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल है। (बहारे शरीअत, 1 / 52)

बांज़ अभियान व मुर्सलीन तमाम मर्ज़ूक़ाते इलाही, इन्सो जिन व मलक से अफ़ज़ल (अमीरुल मोमिनीन हज़रत सत्यिदुना) सिद्दीक़े अकबर है, फिर (अमीरुल मोमिनीन हज़रत सत्यिदुना) उमर फ़ारुक़े आंज़म, फिर (अमीरुल मोमिनीन हज़रत सत्यिदुना) उस्माने ग़नी, फिर (अमीरुल मोमिनीन हज़रत सत्यिदुना) मौला अली (رضوان اللہ علیہ وسلم) (बहारे शरीअत, 1 / 241)

ख़ुलफ़ाए अरबआ राशिदीन के बाद बक़ी़ अश़हार मुब़हरा व हज़रत हज़ूर व अस्हाबे बदर व अस्हाबे बैठते रिज़वान के लिये अफ़ज़लियत है और येंह सब कुत्तई जनती हैं। (बहारे शरीअत, 1 / 249) (या रे कि) कोई बली कितने ही बड़े मर्जवे का हो, किसी सहाबी के रुटवे को नहीं पहुँचता। (बहारे शरीअत, 1 / 253) (नीज़) तमाम औलियाए अवलीन व आख़िरीन से औलियाए मुहम्मदीन या'नी इस उम्मत के औलिया अफ़ज़ल हैं।

(बहारे शरीअत, 1 / 264)
तेरा मिस्ल नहीं है खुदा की क़सम!

मीठे मीठे इस्लामी भाष्यो! गौर कीजिये! जब एक चली अगर्चे कितने ही बड़े मर्जे का हो, किसी सहाबी के बराबर नहीं हो सकता, इसी तरह कोई सहाबी अगर्चे वोह कितने ही बड़े मर्जे का हो, किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता, तो एक अभाव उभारती अपने नबी के बराबर कसूं कर हो सकता है? और हमारे आकाश ब्रह्मांड तो सब नबियों के भी नबी हैं, उन की बराबरी का दावा करना तो सरासर नादानी, खुली बे अदबी और दोनों जहां की बराबरी है।

सदरशरीरी, बदरुत्तुरीका हज़रते अल्लामा मोलना मुफ़्ती अमजद अली आ’ज़मी इरासाद फरामाते हैं: मुहाल है (या’नी मुमकिन ही नहीं) कि कोई हज़रत (صلى الله عليه وسلم) का मिस्ल हो जो किसी सिक्कते ख़ासस में किसी को हज़रत (صلى الله عليه وسلم) का मिस्ल बताए, गुरुराह है या काफिर। (बहारे शरीफ़, 1/66)

हमारे आकाश का मिस्ल कही था, न है और न होगा, वोह तो बे मिस्लो बे मिसाल हैं, खुद इरासाद फरामाते हैं: इन्न सूरतः कियों? में तुम जैसा नहीं। (صحيح مسلم كتاب الصيام باب التفسير في الصوم, حديث:101،ص.55) एक और मक़ाम पर सहाबात कुरास से इरासाद फरामाता: यहीं ७०७४ तुम में से कौन मेरा मिस्ल है? (صحيح مسلم كتاب الصيام باب التفسير في الصوم, حديث:101،ص.55)

जब कि हज़रत सत्यिदुना सिद्धीके अकबर से इरासाद फरामाता: पिाखाक! और बैठों बैठों! ऐ अब बकर! उस जात की क़सम जिस के क़ब्रें में मेरी जान है, मेरी हँसँक़त को सिवाए मेरे रब के और कोई नहीं जानता। (مطالع المسارات,ص.38)

इस लिये सत्यिदी आ’ला हज़रत इरासाद फरामाते हैं: वोह खुदा ने हैं मर्ज़ा तुझ़ को दिया, न किसी को मिले न किसी को मिला कि कलामे मजीद ने ख़ाइ सहा तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम तेरा मसनदे नाज़ है अशंरी बहीं, तेरा महरमे राज़ है रुढ़ी अमीं तू ही सवर हर दो जहां है शहा तेरा मिस्ल नहीं है खुदा की क़सम

(हदाइक़े बख़िशा, स. 80, 81)
अश्वार की वजहात

हम गुनहगारों की शफाअत फरमाने वाले यारे आक़ा ! **अल्लाह** उज़्ज़ ने जो मक़ामो मर्त्वास आप को अल्ता फरमाया है, वोह आज तक न किसी को मिला है और न कियामत तक किसी को मिलेगा, **अल्लाह** उज़्ज़ ने कुरालाए पाक में आप के दहने मुबारक से निकलने वाले यारे अलफ़ाज़ और आप की मुबारक ह्यात (या'नी ज़िज़दगी) की क़सम याद फरमाई है।

या रसूलल्लाह ! आप की अजुम्मतो शान का अन्दाज़ कौन लगा सकता है कि अर्ज़ मुअल्ला तो आप के नायो अदा से बैठने की जगह है और ज़िज़दग़ अमीन अल्लाह के हमराज़ व वज़ीर हैं और आप दो ज़हानों के बादशाह हैं, मेरे आक़ा ! ख़ुदा की क़सम ! आप जैसा कोई नहीं है। (शहीं कलावे रज़ा, स. 226, मुलख़बन)

**सल्ला उल्लाहु ऑलीहु मुहम्मद**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** उज़्ज़ ने तमाम अम़बियाए किराम आमर बेयरफ़ रही उनके **सल्ला उल्लाहु ऑलीहु मुहम्मद** (या'नी नेकी का हुब्ब देने और बुराई से मनः करने) के लिये बसरी (या'नी इन्सानी) सूरत में मब़क़ा फरमाया। मगर ये नुफ़स पूक़स सुश्रीया जिस्मानी आ'ज़ा और ज़ाहिरी श्लक्ष सूरत के एंतिवार से आम इन्सानों की सुरह होने के बावज़ूद मक़ामो मर्त्वास के लिहाज़ से उन से कई दर्जे अफ़ज़ले आ‘ला हैं और फिर तमाम अम़बिया व मुरस्लीम में हमारे घरे आक़ा, इमामुल अम़बिया **सल्ला उल्लाहु ऑलीहु मुहम्मद** का मक़ाम सब से अफ़ज़ल है।

**माहें रज़ब से फाइदा उठाएं !**

यकीनन हमारे आक़ा की शानो शौकत बहुत बुलन्दो बाला है, हमें अपने यारे आक़ा **सल्ला उल्लाहु ऑलीहु मुहम्मद** के मक़ामो मर्त्वास को पेशे नज़र रखते हुवे, आप की ता'ज़ीमो तौकीर बज़ा लानी चाहिये, आप की झेरे मुबारका और फ़रामीने आलिया पर अम़ल करते हुवे आखिरत कीतज़याय में मस्नूल रहना चाहिये, बिल ख़ुस्स माहें र-ज़बुल मुरज़ब में पंज वक़ता नमाजे बा जमानत अदा करने के साथ साथ ख़ूब ख़ूब नफ़्ल इबादात व तिलावते।
कुरआने करीम की आदत, झूट, ग़ैबत, चुग्ली, गाली गलोच, फिल्में द्रामे देखने और हर क्रिस्म के गुनाहों से बचने की कोशिश करनी चाहिये । मगर अफ्सोस ! सद अफ्सोस ! फ़ी ज़माना एक तालाब है कि इस माहे मुबारक की शानी अज्ञात से ना वाकिफ है और जिन्हें इस की कठोर मज़िलत का इच्छा भी है, मगर उन के मां-मूलते जिन्दगी में भी कोई खास फ़र्क नहीं आता और इस माहे मुक़्दस को ग़फ़्लत की नज़र कर देते है | हज़रत सय्यदुदान अल्लामा सफ़ारी ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ 

रजब के रोज़ों के फ़ज़ाइल

1. माहे रजब हुम्मत वाले महीनों में से है और छते आसमान के दरवाज़े पर इस महीने के दिन लिखे हुए हैं । अगर कोई शख्स रजब में एक रोज़ा रखे और उसे परहेज़गारी से पूर्ण करे तो वोह दरवाज़ा और बोह (रोज़ा वाला) दिन, उस बन्दे के लिये अल्लाह ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ 

नामाख्यात ब्लैकबुक, विशेष रूप से मुहम्मद (ص مَاثَبَتَ بِالسُّنۃ, ص ۲۴۳)
2. जनन में एक नहर है, जिसे “रजज” कहा जाता है, जो दूध से
जियादा सफेद और शहद से जियादा मीठी है, तो जो कोई रजज का
एक रोज़ा रखे, तो अल्लाह उसे उस नहर से सैराब करेगा।

(अज़ फैज़ून सुन्नत, स. 1362 / 3880)

3. जिस ने रजज का एक रोज़ा रखा तो वोह एक साल के रोज़ों की तरह
होगा, जिस ने सात रोज़े रखे, उस पर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द
कर दिये जाएंगे, जिस ने आठ रोज़े रखे, उस के लिये जनन के आठों
दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, जिस ने दस रोज़े रखे, वोह अल्लाह से
जो कुछ मांगेगा, अल्लाह उसे अत्ि फर्माएगा और जिस ने
पंद्रह रोज़े रखे, तो आसमान से एक मुनादी निदा (या’नी ए’लान करने
वाला ए’लान) करता है कि तेरे पिछले गुनाह बख़्श़ दिये गए, पर तु
अज़ से नौ अमल शुरूम कर कि तेरी बुराईयां नेकियों से बदल दी
गई और जो जाड़ करे, तो अल्लाह उसे और जियादा अग्र
देगा। (अज़ फैज़ून सुन्नत, स. 1365 / 3881)

मीठे मीठे इस्लामी भाषायो! देखा आप ने कि र-जबुल मुरजज के
रोज़े रखने वालों के तो वारे ही नियारे हैं। दुन्या में चन्द दिन की मशक्क़त सह
कर माहे रजज के रोज़े रखने वाले, आखिर में रजज उज़्ज़ रखने की रहमत के मजे
लूट रहे होंगे, जननी मशरूबान से लुतफ़ अन्देशों होने, जहन्नम के दर्दनाक
अजज़ब बने बस ख़ौफ़ होने के साथ साथ ढेरों इन-आमात से नवाज़े जा रहे होंगे।
हमें चाहिये कि हम भी आखिर में मिलने वाले इस अनज़े अजज़म के हृदयार
बनने की कोशश करे और फर्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ल रोज़ों का भी
एहतिमाम करें।

शैख़ तृतीयक़, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दाँवे इस्लामी हज़रते
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्लास अतार कादिरी रजजी ज़ियाई
को भी नफ़्ल रोज़ों से बहुत प्यार है। यही वजह है कि आप
साल के मम्मूड़ दिनों के इलावा अक्सर रोज़े से होते हैं। इस के
इलावा पूरे माहे रजब और दीगे मुक़दस महीनों के रोज़े रखने के साथ साथ पीर शरीफ की लगातार तरग़िब दिलाते हैं। आप की तरग़िब की बदौलत, बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें र-जबुल मुरज़ज़ब के पूरे वरना अक्सर दिन रोज़े रखने की साधनता भी हासिल करते हैं और पीर शरीफ का रोज़ा रखने वालों की भी एक कसीर तांदाद है। पीर शरीफ का रोज़ा रखना तो हमारे मदनी हिंदूमात में भी शामिल है। चुनाव-ने, इस्लामी भाइयों के 72 मदनी हिंदूमात में से मदनी हिंदूमात नम्बर 58 है: क्या आप ने इस हफ़्ते पीर शरीफ (या रह जाने की सूत्र में किसी भी दिन) का रोज़ा रखा? नीज़ इस हफ़्ते कम अज़ कम एक दिन खाने में जब शरीफ की रोटी तनावल फ़रमाई?

याद रखिये! रोज़े रखने के बे शुमार फ़वाइड हैं, रोज़े रखने से न सिफ़ उख-रवी कई फ़वाइड हासिल होते हैं बल्कि कसीर दुन्यवी फ़वाइड भी मिलते हैं।

रोज़े रखने के फ़वाइड

शैखें तरीक़त, अमीरे अहले सुनन्त दामान नबी के उपकरणों में रोज़े रखने की तरग़िब दिलाते हुवे दुन्यवी उख-रवी फ़वाइड बताते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं: फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा नफ़्ल रोज़ों की भी आत्म बनानी चाहिए यि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइड हैं और सवाल तो सत्ि है जिस की चाहता है, बस रोज़े रखने ही चले जाएं। मज़ीद दीनी फ़वाइड में ईमान की हिफ़ाज़त, जहनम से नज़त और जनत का हृसुल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइड का तअल्लुक है तो रोज़ा में दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़त और अख़राज़ा की बचत, पेट की इलाह और बहुत सारे अमराज़ से हिफ़ाज़त का सामान है और तमाम फ़वाइड की असल यह है कि इस से अल्लाह گرف़ज़ के राजी होता है। (फ़ैज़ने सुनन्त, बाब: फ़ैज़ने सज्जन, स. 1333)

صلى الله تعالى علی مَعْلَمَة!
नप्ल रोजों की मदनी तहरीक

फरमाने मुस्तफा : अगर किसी ने एक दिन नप्ल रोजा रखा और ज़मीन भर सोना उसे दिया जाए, जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो कियामत ही के दिन मिलेगा।

आशिक़ाने रोजा की तनज़ीमी दरजा बन्दी

- मुमताज़ : जो सौमे दावौदी या ’नी एक दिन छोड़ कर एक दिन रोजा रखे या महीने में कम अज़ कम 15 रोजे अपनी सहूलत के मुताबिक रखे या 5 मम्नूआ अघ्याम के इलावा सारा साल रोजे रखे। (ईदुल फित्र और 10, 11, 12, 13 जुल-हिज़ातिल हुराम को रोजा रखना, मकरहे तहरीमी है।)

- बेहतर : जो हर पीर शरीफ़ और जुमा’रात का रोजा रखे (पीर और जुमा’रात का रोजा सुन्न है, अलवता जो अपनी सहूलत के मुताबिक मदनी माह में 7 रोजे रखे ले, वोह भी तनज़ीमी तौर पर "बेहतर" में शुमार होगा।)

- मुनासिब : जो हर पीर शरीफ़ को या मजबूरी हो तो हफ़्तावार छूटी वाले दिन रोजा रखे। (यू महीने में 4 / 5 रोजे होंगे।)

- नप्ल रोजा क़सदन शुरू अर में से पूरा करना वाजिब हो जाता है, अगर तोड़ेंगा तो क़़सदन वाजिब होगी। (दुलखतार 3, ص 190)

- मुलाजिम या मजदूर अगर नप्ल रोजा रखें और काम पूरा नहीं कर सकते तो “मुस्ताजिर” (या’नी जिस ने मुलाजिमत या मजदूरी पर रखा है, उस) की इजाजत ज़ुरू है और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाजत की ज़ुरूत नहीं। (दुलखतार 3, ص 208)

नप्ल रोजा रखने की सूरत में काम पूरा नहीं कर सकते तो किसी की इजाजत कार आपद नहीं, मुलाजिमत करने वाले बारह समझते हैं कि रोजे की वजह से उन के काम में हरज वाक़्म नहीं हो रहा, हालांकि बसा अवक़ात बहुत ज़ियादा सकारत पड़ रही
होती है, खुशसूसन अँवामी मक़ामात पर काम करने वाले, होटलों पर खाना पकाने वाले, मेज़ों पर पहुँचाने वाले या मज़दूर वगैरहा, तो उन का अपने जेहन में एक आध मरत्वा समझ लेना काफी नहीं कि काम में ह्रज नहीं हो रहा बल्कि निहायत गौर कर लेना ज़रूरी है कि कहीं नफ़्ल रोज़े के शोक में इजारे के काम में सुस्ती कर के हुराम कभाइ खाने के मुर्तिकब न हों। खुशसूसन दीनी मदारिस के असालिज़ को इस मसाले का ख़याल रखना ज़ियादा ज़रूरी है कि उन्हें तो कोई नफ़्ल रोज़ा में रखसत की इजाज़त भी नहीं दे सकता।

पतूलवे इल्मे दीन अगर अपनी तालीम में मां मूली सा भी ह्रज देखे तो हरगिज़ नफ़्ल रोज़ा न रखे बल्कि बोह हफ़्तावार छूटे के दिन रोज़ा रख कर “मुनाफ़सिब” का दरजा हासिल कर सकता है, नीज़ मननी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरीन थोड़ी सी भी कमज़ोरी मह़सूस करें तो नफ़्ल रोज़ा न रखे ताकि हुसूले इल्मे दीन और नेकी की दाँवत के अफ़ज़ल तरीन काम में कमज़ोरी रुकावट न बने, अगर इलावा अज़ीज़ कारकदरगी में तपस्युल है, तो मननी क़ाफ़िले में सफ़र की वजह से रह जाने वाले रोज़ों से तनज़ीबी तौर पर दरजा बन्दी में असर नहीं पड़ेगा।

जहां भी नफ़्ल रोज़े के सबब किसी अफ़ज़ल काम में ह्रज वाक़ेछ़ होता हो, वहां रोज़ा न रखे, मसलन अगर किसी इस्लामी भाई की ज़िम्मेदारी इस नोडियत की है, जहां अँवाम से ब कसरत वासिता पड़ता है और रोज़ा रखने से उस के मिज़ज़ में तुरुंगी पैदा हो जाती है, तो अगर वे काम पूरा हो जाता हो, लेकिन लोगों के साथ बद अख़लाक़ी से बचना, नफ़्ल रोज़ों के मुक़ाबले में ज़ियादा ज़रूरी है।

मां-बाप अगर बेटे को नफ़्ल रोज़े से इस लिये मनः करें कि बीमारी का अन्देशा है, तो वालिदन की इत़ाअत करे।

शौहर की इजाज़त के बिग़ैर बीवी नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती।
मदनी इलितजा : नफ़्ल रोज़ों की मदनी तहरीक में शामिल होने वाले
इस्लामी भाई इस नम्बर (0092) 31-25921226 पर अपना नाम, शहर का
नाम, मोबाइल नम्बर और दर्जा (मुमताज़, बेहतर, मुनासिब) SMS फ़र्माएं।
12 रोज़ा मदनी कोर्स की तरहीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयों ! नेक बनने, नफ़्ल रोज़े रखने, नफ़्ल
इबादत का ज़ख्शा बेदार करने के लिये 12 रोज़ा मदनी कोर्स करने की
नियत भी कर लीजिये। यह कोर्स शैखे तृतीक़, अमीरे अहले सुनन्त, बानिये
दांवते इस्लामी हृज़रते अॅल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अॅत़ार
क़ादिरी रज़व़ी जियाई क़ा मांट इलामी उल्लाह़ी का पसन्दीदा कोर्स है। आप फ़र्माते हैं कि
इस 12 रोज़ा मदनी कोर्स को 100 बार किया जाए तो भी कम है। इस मदनी
कोर्स में ऐसा क्या है?

शैखे तृतीक़, अमीरे अहले सुनन्त ने इस पुर फितने दौर
में नेकिया करने और गुनाहों से बचने के तृक़ों पर मुश्तमिल शरीरीतो
तृतीक़ का जामेत मज़मूआ मदनी इ-आमात की सूरत में अॅत़ा फ़र्माया है।
इस 12 रोज़ा मदनी कोर्स में इन मदनी इ-आमात पर अर्मल करने की
आसानिया और इन पर अर्मल करने की अर्मली मशक़ भी करवाई जाती है।
इस के इलावा तहज़जुद, इशराक व चाशत, दुरस्त तलफ़ुज़ के साथ तिलावते
कुरानी पाक, अवरादो वज़ज़फ़, मुनासिब, मदनी हुलक़ा और शाज़रा शरीफ़ भी
पढ़ाया जाता है। नीज़ बातिन की इस्लाह़ व मदनी तरबियत के लिये
मोहलिक़त (या’नी हलाक़त में डालने वाली बातिनी बीमारियों) मसलन
हसत, तकब़र, रियाक़री, बद गुमानी वग़ारा मौज़ुआत पर वर्णनात, नमाज़ का
तृतीक़, फुज़ूल बातों से बचने के लिये इशारे और बहुत कुछ सीखने का
मौक़् आ मिलता है।

दुआए अज़़ार ! या अल्लाह हुक़म़े जो कोई भी 12 रोज़ा मदनी
कोर्स करे, पुल सिरात पर से बोह बिज़ली की सी तेज़ी से गुज़र जाए और बे
हिसाब जन्मत में दाख़िला हासिल कर ले और महबूबे करीम
का उसे पठायो मिल जाए।
रजब में बीज बोना, शांता में पानी देना और रमजान में फसल काटना

मीठे मीठे इस्लामी भाष्यो! माहे र-जबुल मुरजज़ब के आते ही हमें इस बात की खुशी होनी चाहिए कि अब नेकियों का सीज़न (Season) शुरू होने वाला है, माहे रजब में लगाए हुए इबादत के बीज को सींच कर माहे शांता में पौदा और माहे रमजान में फल दार दरख्त बना कर उस के फल चुनने का मौसम आने वाला है। ज़रा सोचिये! एक किसान जब फसल के लिये बीज बोता है, तो किस क़दर मेहनत व मशक्कत से काम लेता है? पहले पूरी जमीन की सफाई करता है और हर वोह चीज जो फसल को नुक़सान दे सकती हो, पूरे खेत की जमीन को उस से पाक करता है, फिर उस में हल चला कर मिट्टी को नर्म करता है, ताकि बीज आसानी से बोया जा सके, बीज बो चुकने के बाद फसल के लिये बक़्तन-फ़-बक़्तन पानी का इन्तज़ाम करता है, फसल की पैदावार में इज़ाफ़ा करने के लिये मुनासिब वक़्त पर उस में खाद वर्ग़ा दालता है, फिर जब तक कि फसल पक न जाए, किसान उस की हिफ़ाज़त करता है और अपनी फसल को कीड़ों, जड़ी बूटियों और दीघ मुज़िर अश्या (फसल को नुक़सान देने वाली चीज़ों) से बचाने की कोशिश में लगा रहता है, इस तरह एक तवील जिह़ड़े जिह़ड़े के बाद जब फसल पक कर तयार हो जाती है, तब वोह उसे काटने की फ़िक्क करता है और फिर उस में तवानाई सर्फ़ करता है और इतने तवील अर्से के बाद वोह उस नन्हे से बीज से फाइदा उठा पाता है। इसी तरह होना तो यूं चाहिए कि माहे र-जबुल मुरजज़ब के आते ही हम भी अपने दिल में फसले इबादत का बीज बोने की कोशिश में लग जाएँ, वोह चीज़े जो हमें इबादत से दूर कर सकती हों, उन का जाणा ले कर उन्हें अपने से दूर करने की कोशिश करें, नेक लोगों की सोहबतों से वास्तव ही कर इल्मे दीन सीखने की कोशिश करें, बुजुर्गों की इबादत के वाक़िआत का मुतालआ करें, इस के बाद माहे रजब में इबादत व रियाज़त करें, फिर माहे शांता मुरजज़म में भी इस सिलसिले को जारी व सारी रहें और माहे
रमजानुल मुबारक के आते ही इबादतों और रियाज़तों में मजीद इज़ाफ़ा कर दें,
क्यूंकि रमजानुल मुबारक फ़स्ते रहमत काटने, इबादत का फल पाने और
अपनी बक़्रिशा करवाने का महीना है ।

न करना हुसर में पुरस्वी भारी हो न तथा बक़्रिशा
अग्नि कर बागे फिरदौस अज़ पर शाहे उमम मोला

(वसाइले बक़्रिशा, स. 97)

मीठे मीठे इस्लामी भाषिय़ो ! हमारे प्यारे आक़ा
ख़ुद भी माहे रजब, माहे शाबान और माहे रमजान इबादत व रियाज़त में
गुज़रते और अपने सहाबए किराम
उन्हें इबादत को भी इस माह में ज़ियादा से
ियादा इबादत करने की तरीक़ा इरादा फ़रमाते । आइंई ! इस से
मुत़ाल्लिक़ 3 अहदादीसे मुबारका सुनते हैं ।

1. प्यारे आक़ा
उन्हें इबादत से
इरादा फ़रमाय़ा : तुम पर लाज़िम है कि माहे रजब की रातें, कियाम में
गुज़रो और इस माह के दिन रोज़े की हालत में गुज़रो और जो शख़्स
इस महीने के किसी दिन में पचास (रक़अ़त) नमाज़ पढ़े, इस तृष्ण कि
हर रक़अ़त में ब-क़ृत्राई इसलियाब़त कुरान वाले पाक की तिलावत करे, तो
अल्लाह
उस शख़्स को उस के बालों और रूहों की ता’दाद के
बराबर नेकियां अन्त़ा फ़रमाएगा ।

(تاریخ دمشق، ذکر علي بن يعقوب بن يوسف بن عمران البلاذری ١٩٢،ملتقعا ،)

2. एक बार प्यारे आक़ा
उन रजब से पहले खुलबए
e जुमआ देते हुवे इरादा फ़रमाय़ा : ऐ लोगो ! बेशक तुम पर एक
अज़ीम महीना सा फिग़न होने को है, इस महीने में नेकियों का अंग
दुगना दिया जाता है, इस माह में दुआ़ा कबूल होती हैं, इस माह में
muşīklaat हल होती हैं और इस माह में मौमिन की दुआ रद नहीं
होती, पस जो शख़्स इस महीने में कोई भलाई का काम करे, तो उस
cो कई गुना अज़ दिया जाता है ।

(تاریخ دمشق، ذکر علي بن يعقوب بن يوسف بن عمران البلاذری ١٩٢)
3. फरमाने मुस्तफा : रजब के महीने में इटिगफार की कसरत करो। पस बेशक इस के हर हर लम्हे में कई अफ्राद को अल्लाह आग से ख़लासी अता फरमाता है।

(क़ज़िद उल्ला, ج، حفص، ص ۲۳۳، كتاب الإذکار، الفصل الأول في الاستغفار، حديث: ۲۰۰۸)

में रहमत, मग़फिरत, दोज़ख़ से आज़ादी का साधत हुं।
सहे रमज़ान के सदे में फरमा दे कर्म मौला।

(वसाइले बहिश्ना, स. ۹۸)

صلी اللہعلیعلیمحمद

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम

"अलाकाह्द दौरा बराए नेकी की दा’वत"

मीठे मीठे इस्लामी भाष्यो ! नेकी की दा’वत को आम करने और सारी दुन्या में कुरआन सुनने की तालीमात को फेलाने के लिये दा’वते इस्लामी दिन रात मस्तुफे अमल है। आप भी इस अज़ीम मक़सद में दा’वते इस्लामी का साथ देने के लिये जैली हलके के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की कोशिश कीजिये। जैली हलके के इन 12 मदनी कामों में से हफ्तावार एक मदनी काम "अलाकाह्द दौरा बराए नेकी की दा’वत" भी है। जिस का बुनायाद मक़सद दुन्या की धुन में मगन अफराद को उन के मक़सदे हलकी की आगात करना, नमाज़, रोज़े की तरफ़ रागिब़ करना, गुनाहों से नफरत और नेकियों से महब्बत पैदा करना का ज़ेहद़ देना शामिल है। इस में कोई शक नहीं कि यह तमाम काम नेकी की दा’वत देने और बुराई से मनुष्कर महत्त्व पूरा करने में ही शुमार होते हैं। नफरती इबादियाँ को छोड़ कर नेकी की दा’वत देना और बुराई से मनुष्कर करना, यह किस कुदर अहम काम है, इस का अन्ताज़़ इस बात से लगाये कि कुतुबे रब्बानी, गौसे सम्दानी, हुज़ूर सहियुदना शैख अबुदुल कादिर जीलानी के इराशाद फरमाते हैं: नेकी का हुकम देना और बुराई से मनुष्कर करना मेरे नज़दीक उन हज़ार आबिदों की इबादत से ज़ियादा पसन्दीदा है, जो तन्हाई में बैठ कर इबादत करने वाले हैं।

(الفتح الربانی، المجلس الرابع والخمسون، ص ۱۸۱)
सवाल खरे की नियत से हमें भी अलाकाई दौरा बराए नेकी की
दावत में शिक्षक को अपना मा’मूल बना लेना चाहिये और बक़्तन-फ-बक़्तन
अपने घर, मसाजिद, महल्ले और सफर वगैरा में जब भी मौक़ा मिले लोगों
पर इनफ़िगरादी कोशिश जारी रखिये। आइये! तस्सीब के लिये एक मदनी
बहार सुनते हैं।

मदनी बहार

मदनीतुल ओलिया (मुल्तान शरीफ, पंजाब, पाकिस्तान) के रिहाइशी
इस्लामी भाई अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी के ख़ातिम का तज़किरा कुछ इस
tरह लेने हैं: दाँवते इस्लामी के मदनी महोल से मुनस्लिक होने से पहले
बिनी का ज़ूनून की हद तक इस क़दर शौकीन था कि सारी सारी रात
इस ह्राम काम में बसर हो जाती और जब मौकाम मिलता तो सींगमा घर का
रख भी कर लिया करता, नमाज़ ख़ुशा हो जाने पर भी मेरे दिल में एहसास व
नदामत पैदा नहोता, मेरे सुधरने का सबब कुछ यून बना कि एक रोज़ दाँवते
इस्लामी के मदनी महोल से बाबत सच इस्लामी भाई मेरे पास तसरीफ़
लाए और मुझ पर इनफ़िगरादी कोशिश करते हुवे उफ़तावर सुननतों भरे,
इज़तिमाउ में शिक्षत का ज़हन दिया, में न हामी भर ली और मुक़ररया दिन
अफ़्दने भरे इज़तिमाउ में जा पहुँचा। सुननतों भरे बयान और ज़ितुल्लाह से
फैज़ज़यब हुवा और जब सच्चत अंगेज़ु दुआ शुरुआ तो में ने अपने साविका
गुनाहों से तौबा की और आइनदा गुनाहों से बचने का इरादा कर लिया,
सन्द खिले के बांदे जब मेरी मुलाक़ात खैर ख़वाह इस्लामी भाई से हुई तो उन्होंने ने
मुझे सबज़ानुल मुबारक मे ए’तिकाफ़ करने का मदनी ज़हन दिया इज़ज़दालन
में ने उन की बात पर धियान न दिया, मगर जब उन्होंने ने इज़तिमाई ए’तिकाफ़
की बरकत और मदनी बहार बताईं तो में ए’तिकाफ़ करने के लिये तयार हो
गया और सुननतों भरे इज़तिमाई ए’तिकाफ़ की बरकत हासिल करने के लिये
मो’तिक़फ़ हो गया, इस की बरकत से जहाँ मुझे नमाजों की पाबनदी नसीब हुई,
वहीं पर वुज़ु, गुस्त, तयमुम और नमाज़ के फ़राइज़ व वाजिवात का भी इलम
हासिल हुआ और नेकी की दावत आय करने का जज्बा दिल में मौजूद हो गया। अलाकाई सतह पर मदनी इनआमत जिम्मेदार की हैसीयत से दावते इस्लामी के मदनी काम आय करने की साइदाद भी हासिल है।

तुम को कुछ मार्लूम है यारो! मज्जे

दावते इस्लामी से क्यूं प्यार है

इस पे है नजरे करम सरकार की

दावते इस्लामी से यूं प्यार है

(वसाइल बख़्शाश, स. 701)

{

 صلى الله تعالى عليه وسلم

रजब की बरकत अरी ख़ास रातें

मीठे मीठे इस्लामी भाियो! यूं तो र-जबुल मुरज़जब का पूरा महिना ही अल्लाह عَزَّوَٰ muzzle के फ़ज़्लो कर्म से रहमतों और बरकतों की ब्यास छोड़ बरसात लिये हुवे है, लेकिन ख़ास तौर पर इस माह की यकुम और सत्ताईस्वीं शब्द के बहुत से फज़िल, अहादीसे मुबारका में मौजूद और बुजुर्गी। दीन से मन्कूल है। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सत्यिदुना अलियुल मुर्तजा, शेरे खुदा كر על-XII का दस्तूर (या’नी तूरीका) था कि आप साल में 4 रातें हर काम से ख़ाली कर के इबादत के लिये मख़्सूस फरमाया करते थे। (या’नी इन 4 रातों में मख़सूस एहतिमाम के साथ इबादत फरमाते, इन चार रातों में से एक) माहे रजब की पहली रात भी है। (गुन्युत्तालीबीन, जि. 1, स. 328)

जब कि हज़रते सत्यिदुना ख़ालिद बिन मांदान رضَّع الله تعالى عليه फ़रमाते हैं: साल में पांच रातें ऐसी हैं, जो उन की तस्दीक करते हुवे ब नियत सवाब उन को इबादत में गुज़रेगा, तो अल्लाह ثِبः तथाला उसे दाख़िले जनन फरमाएगा (उन रातों में से एक रात) रजब की पहली रात (भी है) (गुन्युत्तालीबीन, जि. 1, स. 328) जिस तरह इस माह की पहली शब्द, निहायत फज़िलत की हामिल है, इसी तरह इस माह की सत्ताईस्वीं तारीख के भी बे शुमार फज़िल है। ये वोह रात है कि जब प्यारे आक़ा
मेरा राज के लिये तलाश पड़ लाए और यही बोह रात है कि जिस में मकर मदनी मुस्तफा(صلى الله عليه وسلم) की तरफ़ पहली बढ़ी भेजी गई। हृदसे पाक में है: सताईस्वी र-जबुल मुरज्जज में नेक अमल करने वाले को 100 बरस का सवाब मिलता है। (शुक्ल इलाम ज-सं 3-31 हदीथ) एक और हृदसे पाक में है: रजब में एक दिन और रात है, जो उस दिन का रोजा रखे और बोह रात नवाफिल में गुज़ारे, यह सी बरस के रोजों के बराबर हो और बोह 27 वीं रजब है। (शुक्ल इलाम ज-सं 3-31 हदीथ)

मीठे मीठे इस्लामी भाष्यों! देखा आप ने कि र-जबुल मुरज्जज की सताईस्वी तारीख़ को रोजा रखने, नेक अमल करने और रात में नवाफिल पढ़ने की भी कया ख़ुब फ़ज़ीलत है। यह सब फज़ाइल हमें भी हासिल हो सकते हैं, ब-शर्त यह कि अगर हम सताईस्वी शब झ़बाद में बसर करने और दिन का रोजा रखने पर कमर बस्ता हो जाए।

रजब के कंडे
मीठे मीठे इस्लामी भाष्यो! जिस तरह माहे रजब की सताईस्वी शब को मुसलमान ख़ास एहतिमाम से गुज़ारते हैं, इसी तरह इस माहे मुबारक में हँज़रत सहीदुद्दाना इमाम जा’फर ने सादिक इमाम जा’फर के ईसाले सवाब के लिये कंडे बनाए जाते हैं। सदरशरीराआ, बदरुतरीक़ हँज़रत औल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुम्मद अमजद अली आ’ज़मी इमाम जा’फर के ईसाले सवाब के लिये मौलाना मुफ़्ती मुम्मद अमजद अली आ’ज़मी इमाम जा’फर के ईसाले सवाब के लिये पूरी शि को कंडे भरे जाते हैं, यह भी जाज़, मगर इस में भी
उसी जगह खाने की बांजों ने पाबंदी कर रखी है, येह बेजा पाबंदी है। इस कुंडे के मुतअङ्लिक एक किताब भी है जिस का नाम “दास्ताने अज़ीज” है, इस मौक़ा पर बांज़ लोग इस को पढ़वाते हैं इस में जो कुछ लिखा है उस का कोई सुबूत नहीं वोह न पढ़ी जाए, फातिहा दिला कर ईसाले सवाब करें।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 643)

इसी तरह “दस बीबियों की कहानी” “लक्कड़ हारे की कहानी” और “जनाबे संख्याक की कहानी” सब मन घड़त किस्से हैं, इन को न पढ़ा करें, इस के बजाए एक बार सूरए यासीन पढ़ लिया करें कि दस कुरआने करीम ख्तम करने का सवाब मिलेगा। येह भी याद रहे कि! कुंडे ही में खीर खाना, खिलाना जरूरी नहीं, दूसरे बरतन में भी खा और खिला सकते हैं।

ईसाले सवाब (याँ नी सवाब पहुँचाना), कुरआने करीम व अहादीसे मुबारका से साबित है, ईसाले सवाब दुआ के जरीए भी किया जा सकता है और खाना वग़ैरा पका कर, उस पर फातिहा दिला कर भी। कुंडों की नियाज़ भी ईसाले सवाब ही की एक सूरत है, इस को नाज़ाइज़ कहना, शरीअ़त पर इफ़ितरा (याँ नी तोहमत बांधना) है। नाज़ाइज़ कहने वाले पारह 7 सूरतुल माइदा की आयत नम्बर 87 में बयान कर्दा हुक़म इलाही से इब्रत पकड़े। चुनाने, इतनाहिं होता हैः

याः इहालियः बिन अस्तो इल्होर्हुः माले हः कःल इल्हः कःलः आस्तनः दोनों इल्हः

लैज़ह्व्यः मुःतःबिनः

“रजब के कुंडे” किस तारीख़ को करें?

पूरे माह रजब में बलिक सारे साल में जब चाहें, ईसाले सवाब के लिये कुंडों की नियाज़ कर सकते हैं, अलबत्ता मुनासिब येह है कि 15 र-ज़ुबुल मुरज़जब को “रजब के कुंडे” किये जाएं, क्यूंकि येह आप का यौमे उर्स है,
जैसा कि फ़तवा फ़कीर हें मिल्लत जिल्द 2 सफ़ेदा 265 पर है: “हुज़रते सजियिना इमाम जा’फ़रे सादिक़ हें की नियाज़ 15 रज़ब को करें कि हुज़रत का विसाल 15 ही को हुवा है।” नीज़ मक़तबुलुल मदीना की मत़बूआ क़िताब “शाही शाजरएँ क़ादिरिया” सफ़ेदा 59 पर है: आप रहमतुल्ला तुलल्ला दे को 68 बरस की उम्र में 15 र-जबुल मुरज़ज़ब सिने 148 जि. को किसी शकियुल क़लब (या’नी सेंग दिल ज़ालिम) ने ज़हर दिया, जो आप रहमतुल्ला तुलल्ला की शहादत का सबब बना। आप रहमतुल्ला तुलल्ला का मज़रे आकु़स जननुल बक़ीआँ (मदीनतुल मुनवरा) में वालिदे मोहतरम हुज़रते सजियिना इमाम मुहम्मद बाक़िर के पहलू में है।

अलालाह रज़बुल हज़रत इज्ज़त इल्लाहु वो उन पर रहमत हो और उन के सदे हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

 Reminder: evaluate the language of this document and its suitability for use in a specific context. This could be done through the use of tools and APIs for language detection, sentiment analysis, and other natural language processing tasks.

दा’वते इस्लामी से माली तह़ावुन के फ़्वाइड

मीठे मीठे इस्लामी भाषयो! अपने मह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये कूड़े बनाने या खाने किया का एहतिमाम करने के साथ साथ हर जाइज़ व ने काम का सवाब भी उन्हें पहुँचाया जा सकता है। दीनी कामों की तरवीज़ो इशाअ़ित के लिये ईसाले सवाब की नियंत्र से अपना माल ख़र्च करना भी कारे सवाब है।

दा’वते इस्लामी दीन के पैग़ाम को सारी दुन्या में आँ करने वाली ख़ालिस दीनी और गैर सियासी तहरीक है, जिस का मक़सद हर मुसलमान को यह मदनी ज़हून देना है कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाम की कोशिश करनी है।” फ़ी ज़माना मुआशर में हर तरफ़ गुनाहों का बाज़ार ग़र्म है, हज़ार ब-ज़ाहिर ने नज़र आने वाले शाक्स के क़रीब जाएँ, तो वोह भी बसा अवक़ा अक़ूदे की ख़राबियो, ज़बान की बे एहतियातियों, बदल निगाहियों और बदल अख़लकियों की आफ़तों में
जब कि पारह 26 सूरए मुहब्बद की आयत नम्बर 7 में इर्षाद फरमाता है : अल्लाह

यानी वे जिन्हें आत्मा ने तनावात उन्हें अपने ग्रेग धर करने के लिए कृत्रिम, उन्हें यिशु पर थुक है कि बोह उस की मदद करे जो उस (के दीन) की मदद करे। (तफसीरे दुरू मन्सूर 7/462)

हुकीमुल उम्मत हुज़ैरे मुफ़ती अहमद यार ख़ान इर्षाद फरमाते हैं : औलिया उल्लाह की मदद करना, नवी की खिद्रमत, इस्लाम दीन फैलाना, सब अल्लाह के दीन की मदद है। (नूसल इर्षाद, स. 537)
दूसरे इस्लामी इल्मे दीन का आमंत्रण, मुसलमानों सहित रसूल बनने वाली तह्रीक है। इस लिये इस को मदद करना भी दीन की मदद करना ही कहलाएगा। यदि रखिये! सोने, चांदी, नकदी वागौर से दीन की मदद करता, कोई नया अमल नहीं है बल्कि मीठे मुस्तफ़ा ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ की तर्कीब पर हज़रतिए सत्यि नुआ सिद्धियके अवकाश का अपने घर का सारा माल बाँटने हेतु रिसालत में हाजिर करता। (सन् 1986، नवंबर)

गोया हमें यह सच्चा दे रहा है कि दीन की सर बुलंदी के लिये एक मुसलमान अपना सारा माल कुराव करने से गुरुन न करे। एक और रिवाज के मुताबिक जिस रोज़ हज़रतिए अबू बक सिद्धिके इस्लाम से मुशारफ़ हुवे, उस रोज़ आप के पास चालीस हज़ार दीनार और एक रिवाज में है कि चालीस हज़ार दिरहम मौजूद थे। आप ने यह सारा माल रसूलल्लाह ﷺ के हुकम पर खर्च कर दिया। (फ़िर्रुद्दीन ट्यूर्नेर शर्ह जमागुढ़ा इमाम, 1986-1987, अध्याय के 10ते 11)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयों! इस्लाम की सर बुलंदी के लिये हज़ारतिए सत्यि नुआ सिद्धिके अवकाश का अपना माल कुराव करता का ज़िम्मा सद करोड़ मरहमः! यदि रखिये! मौजूदा दौर में दीनी कामों के लिये चन्द्रा (या'नी मदनी अतिरिक्त) जमाव करना अर्थ ज़रूरी है। प्यारे आक़ा, दो आलम के दाता इल्म से मूलाने गैंब निशान है: “आख़िरे मज़ाने में दीन का काम भी दिरहमो दीनार से होगा।” (लिजामु सिलाई, 1986/87, अध्याय के 10-11)

इस हद्दीसे पक्ष से जहाँ मीठे मुस्तफ़ा ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ का इल्म गैंब साबित हुवा, वहैं यह भी मालूम हुवा कि एक ज़माने में दीन का काम करने के लिये पैसे की सख़्त ज़रूरत पड़ती। फ़िर ज़माना जो हालात हैं, वोह किसी से मख़्दू़ नहीं, चूंकि दाव़ते इस्लामी एक आलमगीर गैंब सियासी तहरीक है, इस लिये इस के अख़राजात को पूरा करने के लिये एक ख़तीर रक्षामक होता है। वैसे तो बिल उमूम सारा ही साल दाव़ते इस्लामी के मदनी कामों के लिये मदनी अतिरिक्त जम्मू करने का सिलसिला रहता है, मगर बिल कुबूस र-जबुल मुरज़ज़ब, शाबानुल मुअज़ज़म और रमज़ानुल मुबारक में लोग
ब-कसरत सदकात व अतिथ्यात की अदाएंगी की तरफ माइल होते हैं, इस वजह से इन महानों में मदनी अतिथ्यात इकम्यूर करने का बेहतरीन मौकाफ़ होता है, हमें भी हुसूले सवाब की ख़ातिर दा’वते इस्लाम के मदनी कायम की तरक़्क़ी के लिये अपने घर, रिसेंटेरेंगों और अहले महहल्ला को सदक़ा के फ़ज़ाइल बता कर ख़ूब ख़ूब मदनी अतिथ्यात जमहो करने चाहियें।

इसमें अहले सुनन मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान फ़तावा रज़विया जिल्द 23, सफ़़ा 152 पर फ़ज़ाइले सदकात पर मुख्यालय अहादीसे मुबारका जिक्र फ़रमा कर इन फ़ज़ाइल का 25 मदनी फूलों में इस तरह इहाड़ा फ़रमाते हैं: इन हदीसों से साबित हुआ कि जो मुसलमान, इस अमल में नेक नियत, पाक माल से शरीक होंगे, उन्हें अल्लाह अज़्ज़ल के कर्म और बारगाहे रिसालत से मिलने वाले इन्आम की बरकत से 25 फ़ज़दे मिलने की उम्मीद है: (1) (या’नी अल्लाह अज़्ज़ल की अज़्ज़ल के से) बुरी मौत से बचेंगे, सत्तर दरवाज़े बुरी मौत के बन्द होंगे (2) उमें ज़ियादा होंगी (3) उन की गिनती बढ़ेंगी (4) रज़क की वस्तु, माल की कसरत होंगी, इस की आदत से कभी मोहताज न होंगे (5) ख़ूँरे बरकत पाएंगे (6) आफ़ते, बलाएं दूर होंगी, बुरी क़ृता टलेंगी, गत़र दरवाज़े बुराई के बन्द होंगे, सत्तर किस्म की बला दूर होंगी (7) उन के शहर आबाद होंगे (8) शिकस्ता हाली दूर होंगी (9) ख़ौफ़ अन्देशा ज़ाइल और इलमीनाने ख़ातिर हासिल होगा। (10) मददे इलाही शामिले हाल होगी। (11) रहमते इलाही उन के लिये वाजिब होगी। (12) मलाईका उन पर दुरद भेजेंगे। (13) रज़जाई इलाही के काम करेंगे। (14) गुज़बे इलाही उन पर से ज़ाइल होगा। (15) उन के गुनाह बख़्छो जाएंगे, मग़फ़र्त उन के लिये वाजिब होंगे, उन के गुनाहों की आग बुझ्ज़ जाएगी। (16) ख़िदमते अहले दीन में सदक़ा से बढ़ कर सवाब पाएंगे। (17) गुलाम आज़ज़ करने से ज़ियादा अज़्ज़ लेंगे। (18) उन के टेट्टे काम दुरस्त होंगे। (19) आपस में महब़बें बढ़ेंगी, जो हर ख़ैरे ख़ूबी की मुतबेढ़ (या’नी पैरवी करती) हैं। (20) थोड़े सर्फ़ में बहुत का पेट भरेंगा कि तन्हा खाते, तो दूना उठाया। (21) अल्लाह अज़्ज़ल के हुजूर
दरजे बुलंद होंगे। (22) मौला तबारक व ताबाला मलाईका से उन के साथ मुबाहत (या'नी फ़ुख्र) फ़रमाएगा। (23) रोज़े कियांित दोज़ख़ से अमान में रहेंगे, आते दोज़ख़ उन पर हराम होगी। (24) आख़िरत में एहसाने इलाही से बहरा मन्द होंगे। (25) खुदा 鳏ूल्ल के चाहा तो उस मुबाक गिरोह में होंगे, जो हूज़ूर पुर नूर, सयदे आलम, सरवरे अकरम صلاة نعیم की ना'ले अक्दस के तस्हुक़ में सब से पहले दाख़िले जनत होगा।

(फ़तावा रज़बिया, जि. 23, स. 152)

صلّى الله تعالى عَلَیْهِ الْحَیْبٍ! صَلَّى اللَّهُ عَلَیْهِ مُحْبَّٰت

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाष्यों! आज के बयान में हम ने सुना:

- माहे रज़ब बहुत ही मुबाक महीना है, इस की अज़मत व बड़ई न सिर्फ़ कुरआन के पाक से साबित है, बल्क अह़दिसे तृ़यिका से भी इस के फ़ज़ाइल बाज़ेड़ है।
- माहे र-जबुल मुरज़ज़ब के नफ़्ल रोज़े रखने वाले ख़ुश नसीबों में मग़फ़िरत व बक़़िशाश के परवाने तक़सीम किये जा रहे हैं।
- माहे र-जबुल मुरज़ज़ब के नफ़्ल रोज़े रखने वाले ख़ुश नसीबों को َالله َعَلَیْهِ الْحَیْبू की रहम़त से “रज़ब” नामी जनती नहर से पीना नसीब होगा।
- माहे र-जबुल मुरज़ज़ब में नेकियों का अज़ दुगना दिया जाता है, इस माह में दुआ़एं क़बूल होती हैं, इस माह में मुशिकलात हुल होती हैं और इस माह में मोमिन की दुआ़ा रद नहीं होती।
- सत्ताईसवी र-जबुल मुरज़ज़ब में नेक अमल करने वाले को 100 बरस का सवाब मिलता है। जो इस दिन का रोज़ा रखे और रात नवाफ़िल में गुज़रे, ये हॉ बरस के रोज़ों के बराबर है।
- 15 र-जबुल मुरज़ज़ब को कई आशिकों ने अहले बैत, “हूज़ूरे सयदनुआ़ इमाम जा'फ़रे सादिक़ ِسَلَّمَُّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَرَحْمَتُهُ ﷺ की नियाज़ व ईसाले सवाब कर के सवाब का अज़मी ख़ुज़ाना जम्म़ करने की सहायत हासिल करते हैं।”
हमारे आकर्षण के लिए इस महामें बतौरे खास रोज़े रखने का एहतिमाम फर्माते थे, अगर कोई शरी रकावत न हो तो जिस क्रृत्री मुमकिन हो, हमें भी इस महामें रोज़े रखने चाहिए, वरना कम अज कम हर पीर शरीफ का रोज़ा रखने की तरकीब तो करनी ही चाहिए।

यूं तो पूरा माहे रजब बरकतों और रहमतों से मांजूर है, लेकिन इस मह की पहली और सताईस्वी रात की खास फ़ज़ीलत है, इस लिये इन रातों की खूब क़दर करनी चाहिए।

**अल्लाह** हमें इस मह की क़दर करने और इसे नेकियों में गुजारने की तौफ़ीक अँत फ़रमाए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इस्लाम की तरफ़ लाते हुवे सुनन्त की फ़ज़ीलत और चन्द सुनन्तें और आदाब बयान करने की साधनत हासिल करता हू। ताजदरे रिसालत, शहनशाह नुबुव्वत, मुस्तफा जाने रहमत, शम्शे बज़े हिदायत, नौशाए बज़े जननत "सल्लाल्लाहु अलाइहि व सल्लाम" का फ़रमाने जननत निशान है: जिस ने मेरी सुनन्त से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की बोह जननत में मेरे साथ होगा।

*(फ़स्काह एलसाइचेज, ج ٥٥ حاديِٰ٥٥ دارالکتب العلمي بيروت)*

सीना तेरी सुनन्त का मदनी बने आक़ा

जननत में पड़ोसी युव़े तुम अपना बनाना

---

चलें "101 मदनी फूल" से बात चीत के अहम मदनी फूल

आइये! दाँवते इस्लामी के मतौल्य़ा रिसाले "101 मदनी फूल" से बात चीत के हुवाले से चन्द अहम मदनी वूल सुनते हैं: ✖ मुस्क़ुरा कर और ख़न्दा पेशाने से बात चीत कीजिये। ✖ मुसलमानों की दिलज़ूरी की नियम से छोटे के साथ मुश्किलाण्ड और बड़े के साथ मुअद्वाना लहजा रखिये। ✖ चिल्ला चिल्ला कर बात करने से हूदस दरजा एहतिमाम कीजिये। ✖ चाहे एक दिन का बच्चा हो अच्ची अच्ची नियम्मों के साथ उस से भी आप, जनाब
से गुफ्तगू की आदत बनाई। आप के अख़्लाक भी शुभ होंगे और बच्चा भी आदाब सीखेगा। ❖ बात चीत करते वक्त पदें की जगह हाथ लगाना, उंगलियों के जरूर बदन का मैल छुट्टाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, धूकते रहना, अच्छी बात नहीं। ❖ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इतःमीनान से मुनीये, बात कटने से बचिये नीज़ दौराने गुफ्तगू कहकहा लगाने से बचिये कि कहकहा लगाना सुनन त से साबित नहीं। बात करते वक्त हमेशा याद रखिये कि ज़ियादा बातें करने से हैबत जाती रहती है। ❖ किसी से जब बात चीत की जाए तो उस का कोई सही ह मक्कद भी होना चाहिये और हमेशा मुखातब के जरूर और उस की नफ़सयत के मुताबिक बात की जाए। ❖ बद ज़बानी और बे हुयाई की बातों से हर वक्त परहेज़ कीजिये, गाली गलोच से इज़तनाब करते रहिये और याद रखिये कि किसी मुसलमान को बिला इज़ाज़तें शरदी गाली देना हुआ मे कुड़ई है।

(फ़तावा ज़ह्विया, जि. 21, स. 127) और बे हुयाई की बात करने वाले पर जनन हुए है। हिजूर ताजदरे मदीना "सल्ला इला�हु अल्लाहु عَلَیْهِ وَسَلَّم" ने फ़स्माया: "उस शख़्स पर जनन हुए है जो फ़ोह़श गोई (बे हुयाई की बात) से काम लेता है।"

(كتَابُ الصَّمْت مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، ج ۷ ص ۴۰۲ رقم ۵۲۳ المكتبة العصیّة بيروت)

तरह तरह की हज़ारों सुननें सीखने के लिये मक़बतबुल मदीना की मलबूआ दो कु़तब बहारे शरीअत हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़हात की किताब "सुननें और आदाब" हदियतन हःसिल कीजिये और पह़ि़ज़ ये सुननें की तरवियत का एक बेहतरीन ज़रीया दांवें इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में अशिक्क़े रसूल के साथ सुननें भरा सफ़र भी है।

अशिक्काने रसूल, आए सुनन के फूल
dेने लेने चलें; क़ाफ़िले में चलो

صُلِّي اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم!
द्वारते इस्लामी के हफ्तावार
शुननें भरे इज़तिमाह में पढ़े जाने वाले
7 दुरुदे पाक और 1 दुआ

(1) शबे जुमआ का दुरुदः

अल्लाहُصَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِکْ عَلَی سِیّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّبِيُّ الَّذِي اَلْحَبِيبُ الْعَالِم الْفَقِيِّ الْعَظِيم

जुमआ ने फरमाया कि जो शख्स हर शबे जुमआ (जुमआ और जुमा'रात की दरमीयानी रात) इस दुरुद शरीफ़ को पाबंदी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के बक़्त सरकार मदीना की जियारत करेगा और क़ब्र में दाखिल होते बक़्त भी, यहां तक कि बोह देखेगा कि सरकार मदीना उसे क़ब्र में अपने रहमत भरे हाथों से उतार रहे हैं।

(2) तमाम गुनाह मुआफ़ः

اللّٰهُصَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِکْ عَلَی سِیّدِ نَا وَمَوْلَْنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلَی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

हज़रत सदिदुना अनस से रिवायत है कि ताजदरे मदीना ने फरमाया : जो शख्स यह दुरुदे पाक पढ़े, अगर ख़ड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

(3) रहमत के सत्तर दरवाज़े

صَلِّ اللّٰهُ عَلَی مُحَمَّدٍ

जो यह दुरुदे पाक पढ़ता है तो उस पर रहमत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا

हज़रत सदिदुना इब्न अब्बास से रिवायत है कि सरकार मदीना ने फरमाया : इस दुरुदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं।
5) छे लाख दुरुल्द शरीफ़ का सवाब :

इस दुरुल्द शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरुल्द शरीफ़ पढ़ने का सवाब हुसिल होता है।

6) कुर्बे मुस्तफ़ाः

एक दिन एक शख्स आया तो हज़ुरे अन्वर अयब्रु के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाब़े शफीक की बैठक के तहत आया कि यह कौन जो मर्त्या है!!! जब वो चला गया तो सरकार अयब्रु के दरमियान दुरुल्द का फरमाया।

7) दुरुल्द शफाअः

शफाएँ उमम का फरमान मुअज़ज़म है: जो शख्स यूं दुरुल्द पढ़े उस के लिये मेरी शफाअः वाजिब हो जाती है!! !

(अल्त्तरूग़िक और अल्तरूग़िक 30:4, हदीथ 1163-1164)

हर रात इबाद़त में शुज़ारने का आशान नुक़़ाः

ग़राब़ुल कुरान सफ़्हा 187 पर एक रिवायत नक़ल की गई है कि जो शख्स रात में यह दुआ़ा 3 मर्त्या पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ा को पढ़ लेना चाहिये।

दुआ़ा यह है:

(अल्लाह उल्लाहु ोल्लाहु ोल्लाहु ुल्लाहु ुल्लाहु ुल्लाहु ोल्लाहु ोल्लाहु ोल्लाहु ोल्लाहु)

आल्लाह ग़रज़ल पाक है जो सातों आस्मानों और अँधेरे अज़़म़ का परवर दगार है। (फ़ैज़ुन सुनन, ज़िल्द अब्राह, स. 1163-1164)